Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 3, No. 2, November – December 2025

बस्तर का दशहरा का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व प्रभाव

भूमिका जैन* शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. डी.एम. साहू** सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भारत विविधता का देश है, जहाँ हर पर्व और उत्सव अपने क्षेत्र, समाज और संस्कृति के अनुसार विशिष्ट रूप ग्रहण करता है। ऐसा ही एक अनुपम पर्व है — "बस्तर का दशहरा।" यह दशहरा देश के अन्य भागों में मनाए जाने वाले राम-रावण युद्ध पर आधारित विजयदशमी से पूर्णतः भिन्न है। बस्तर का दशहरा देवी दंतेश्वरी की आराधना, जनजातीय एकता और राजसत्ता की वैधता का प्रतीक है। इस शोधात्मक लेख का उद्देश्य बस्तर दशहरा को एक सांस्कृतिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में समझना है, ताकि इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक अर्थवत्ता और सामाजिक सरोकारों का गहन विश्लेषण किया जा सके। बस्तर क्षेत्र का इतिहास 13वीं शताब्दी से जुड़ा है। बस्तर राज्य की स्थापना काकतीय वंश के वंशज राजा अन्नमदेव ने की थी, जिन्होंने वारंगल से आकर इस क्षेत्र में शासन स्थापित किया। बस्तर दशहरा की शुरुआत का श्रेय राजा पुरुषोत्तम देव को दिया जाता है, जिन्होंने 15वीं शताब्दी में इस पर्व को संगठित स्वरूप प्रदान किया (Bastar District Gazetteer, 1986)। इस उत्सव का मूल उद्देश्य देवी दंतेश्वरी की आराधना तथा राज्य के विभिन्न जनजातीय समूहों के मध्य एकता स्थापित करना था। बस्तर दशहरा का केंद्र देवी दंतेश्वरी हैं, जो बस्तर क्षेत्र की कुलदेवी तथा शक्ति स्वरूपा मानी जाती हैं। दंतेवाड़ा स्थित दंतेश्वरी मंदिर बस्तर राज्य का धार्मिक केंद्र है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, देवी सती के शरीर का एक दांत इसी स्थान पर गिरा था, जिससे इसका नाम "दंतेश्वरी" पड़ा (Sharma, 2004)। बस्तर दशहरा में देवी की उपस्थिति को समस्त जनजातीय देवी-देवताओं के साथ जोड़कर देखा जाता है। विभिन्न गाँवों से "अंगदेव" (स्थानीय ग्राम देवता) अपनी पालकियों में देवी से मिलने आते हैं। यह "देवी-देवता मिलन" की परंपरा बस्तर दशहरा की सबसे विशिष्ट पहचान है (Sahapedia, 2019)। बस्तर दशहरा केवल धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राजनैतिक संवाद का भी प्रतीक है। पर्व की शुरुआत में राजा अपने प्रशासनिक अधिकार "दीवान" को सौंप देता है, जिससे यह प्रतीकात्मक रूप से प्रदर्शित होता है कि शासन की वास्तविक शक्ति देवी के अधीन है (Elwin, 1947)। दशहरा काल में राजा और प्रजा दोनों देवी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हैं, जिससे सामाजिक संरचना और राजसत्ता के बीच संतुलन स्थापित होता है। ब्रिटिश काल में यह पर्व स्थानीय शासन की वैधता और प्रजा के सहयोग का मंच बना। "Debating Dussehra and Reinterpreting Rebellion in Bastar" (Sundar, 1997) में यह कहा गया है कि बस्तर दशहरा एक 'परफॉर्मेटिव एक्ट ऑफ़ लिजिटिमेशन' है — अर्थात यह शासन की सामाजिक वैधता का प्रदर्शन करने वाला अनुष्ठान है। बस्तर दशहरा लगभग 75 दिनों तक चलता है और इसमें अनेक अनुष्ठान सम्मिलित हैं। इसकी शुरुआत "पाट जात्रा" से होती है,

जिसमें रथ निर्माण हेतु लकड़ी लाई जाती है। इसके बाद "दूरी गाड़ाई", "रथ निर्माण", "देवी आगमन", "मुरिया दरबार" और "कुटुंब जात्रा" जैसे अनुष्ठान संपन्न होते हैं।

"मुरिया दरबार" इस पर्व का राजनीतिक आयाम दर्शाता है, जहाँ राजा और प्रशासन जनता से संवाद करते हैं। अंतिम चरण में देवी-देवताओं को उनके गाँवों में विदा किया जाता है — जिसे "गंगा मुंडा जात्रा" कहा जाता है। यह सामुदायिक संतुलन और नवजीवन का प्रतीक माना जाता है (Bastar.gov.in, 2022) बस्तर दशहरा आदिवासी संस्कृति का उत्सव है। इस पर्व में गोंड, मुरिया, माड़िया, हल्बा, भतरा, परजा जैसी जनजातियाँ सम्मिलित होती हैं। पारंपरिक नृत्य, वाद्ययंत्र, लोकगीत और सामूहिक भोज इस पर्व की आत्मा हैं। यह लोक-परंपराओं, कला और हस्तशिल्प का भी महोत्सव है। इस पर्व के दौरान जनजातीय कलाकार अपने हस्तनिर्मित वस्त्र, धातु-कला और बाँस के उत्पाद बेचते हैं। इस प्रकार दशहरा धार्मिक उत्सव के साथ-साथ आर्थिक क्रियाशीलता का भी माध्यम बन जाता है (Tribal Research Institute, Raipur, 2021 समय के साथ बस्तर दशहरा अनेक आधुनिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। रथ निर्माण हेतु पेड़ों की कटाई से वन-पर्यावरण पर प्रभाव पड़ रहा है। राज्य शासन ने इस प्रभाव को संतुलित करने हेतु पौधारोपण कार्यक्रम आरंभ किया है (Times of India, 2023)।

इसके अतिरिक्त नक्सलवाद और प्रशासनिक सुरक्षा जैसे मुद्दे भी पर्व के आयोजन को प्रभावित करते हैं।आधुनिकता और पर्यटन के बढ़ते प्रभाव से इस पारंपरिक उत्सव का स्वरूप बदल रहा है। तथापि, स्थानीय समुदाय अभी भी इसकी आत्मा को संरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

निष्कर्ष

बस्तर का दशहरा भारतीय संस्कृति का जीवंत उदाहरण है, जहाँ धर्म, लोक और राजनीति एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं। यह पर्व शक्ति की आराधना के साथ-साथ सामाजिक एकता, जनजातीय पहचान और राजसत्ता की वैधता का प्रतीक है। यह शोध दर्शाता है कि बस्तर दशहरा केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक व्यवस्था है — जो समय के साथ अपने स्वरूप को बनाए रखते हुए आधुनिकता से संवाद करती है। देवी दंतेश्वरी की आराधना, जनजातीय सहभागिता और रीतियों की निरंतरता इसे भारतीय लोक संस्कृति का अनमोल अंग बनाती है।

संदर्भ सूची

1. Bastar District Gazetteer. (1986). Government of Madhya Pradesh.

2. Elwin, Verrier. (1947). The Muria and Their Ghotul. Oxford University Press.

3. Sharma, H. D. (2004). Tribal Religion and Festivals of Bastar. New Delhi: Concept Publishing Company.

4. Sundar, Nandini. (1997). Debating Dussehra and Reinterpreting Rebellion in Bastar. Journal of South Asian Studies.

5. Sahapedia. (2019). Bastar Dussehra: Coming Together of Deities. Sahapedia.org.

6. Bastar.gov.in. (2022). Culture & Heritage of Bastar District. Government of Chhattisgarh.

7. Times of India. (2023). 'Tree plantation in Bastar to compensate wood used for Dussehra chariots'.

8. Tribal Research Institute. (2021). Cultural Practices of Bastar Tribes. Raipur.